“Everyone endeavours hard for it but only he whom God ordains is successful”

– मंजुला गौड़

प्रस्तुत पंक्तियाँ शा. डि. ग्रे. पेज ५ से ली गई हैं। इन में बाबूजी 'एड्वेन्ट' यानी महानतम व्यक्तित्व के शुभागमन के विषय में चर्चा करते हुए कहते हैं कि 'मास्टर' के मिशन को पूरा करने का प्रयत्न तो सभी करते हैं परन्तु सफल वही होता है, जिसको ईश्वर इसके लिए नियुक्त करता है।

'मास्टर' का मिशन एक महत्वपूर्ण कार्य है; इस कार्य की गंभीरता को समझने से पहले हम उसके प्रयोजन और उद्देश्य को समझ लें। ईश्वर अपनी सृष्टि में सभी को प्रेम करता है और उन्हें परम शांति और परमानन्द(bliss) से परिपूर्ण करना उसकी प्रकृति (गुण) है। जीर्ण और पतित

अवस्था से मानवजाति के अभ्युत्थान के लिए ईश्वर की शक्ति का आविर्भाव होता है। इस संसार में अपनी अभीष्ट स्थितियाँ लाने के लिए, इसे पूरी तरह सही दशा में लाने के लिए ईश्वर को भी शरीर धारी जीव पर निर्भर करना होता है। इस लक्ष्य के लिए वह जिस किसी को माध्यम बनाता है, वही इसे आगे ले जाता है और सफल होता है।

इसी क्रम में देखें तो वसन्त पंचमी २ फरवरी १८७३ को एक महान व्यक्तित्व; समर्थ गुरू महात्मा रामचन्द्र जी महाराज फतेहगढ़ उ. प्र. भारत का इस संसार में पदार्पण हुआ। इस महान विभूति– ललाजी महाराज – ने प्राचीन राजयोग को संशोधित करके सरल रूप में स्थापित किया। योगिक प्राणाहुति को पुनर्जीवित करके इसको प्रयोग किया। जिससे वह योग वर्तमान परिस्थितियों में जनसामान्य के लिए अपनाने और पालन करने के योग्य हो सके एवं ' परम सत्य' तक पहुँचने में मनुष्य के लिए उपयोगी हो। लालाजी महाराज ने अपने

प्रिय शिष्य पूज्य क्षी रामचन्द्र जी शहाजहाँनपुर उ. प्र. भारत; का निर्माण इस प्रकार किया कि ४ मई १९४४ को, पूज्य बाबूजी के रूप में एक महनतम व्यक्तित्व का आविर्भाव हुआ (द एडवेन्ट) (शा. डि. ग्रे. पेज १) तब से अब तक और आने वाली कई सहस्त्राब्दियों तक वह मानवजाति के आध्यात्मिक–भाग्य का मार्ग दर्शन करती रहेगी।

पूज्य बाबूजी महाराज ने राजयोग को पनः परिमर्जित करके प्रस्तुत रूप दिया जिसे 'रामचन्द्र का राजयोग' के नाम से जाना जाता है। बल्कि इसे हम प्रणाहुति ऐडिड मेडिटेशन – पी. ए. एम. – के नाम से ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। जिसमें प्राचीन प्रणाहुति की पद्धिति का सरल रूप में उपयोग किया जाता है। पूज्य बाबूजी ने अपने 'मास्टर' की स्मृति में उनके नाम से, ३१ मार्च १९४५ को 'श्री रामचन्द्र मिशन की स्थापना की (श्रृति १ पेज ६५०) । 'मिशन का मुख्य उद्देश्य फैली हुई अनाध्यात्मिकता के स्थान पर , सहज

मार्ग के माध्यम से आध्यात्मिकता की स्थापना करना है। '(श्रृति पेज ६५२)। सेवा करना सेवित होने से ज्यादा अच्छा है, इसको ही आदर्श मान कर आई. एस. आर. सी. (श्री रामचन्द्र चेतना संस्थान) मानवता की सेवा करने के लिए प्रस्तुत है।

यह सत्य है कि मिशन की पूर्ति और सफलता के कार्य–विशेष के लिए, प्रतिनिधि की नियुक्ति उसी की होगी जिसके लिए उस परमसत्ता का आदेश होगा। ईश्वर किसी के साथ भेदभाव नहीं करता, वह समदर्शी है, किन्तु यह भी सच है कि परमात्मा का प्रिय पात्र बनने के लिए प्रयत्न तो लगभग सभी जिज्ञासु करते हैं परन्तु साधकों में से कोई विशेष–कृपा पा जाता है। 'मास्टर' उसे अपने प्रतिनिधि होने का अति–कठिन उत्तर्दायित्व संभालने का आदेश देता है। परन्तु वह इसके लिए 'मास्टर' से 'सीधे – प्रकाश' (direct light) प्राप्त करता है।

यद्यपि किसी विशेष की नियक्ति परमात्मा के आदेश से होती है; परन्तु हमारे लिए यह समझना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, कि किस प्रकार के योग्य जिज्ञासुओं, भक्तों, साधकों के समूह में से यह चयन होता है। उस परम चेतना (अल्टीमेट कॉनशसनैस) के जैसी सी, शुध्द, पवित्र, चेतना वाले जीव को ही, उसकी अभिव्यक्ति के लिए चुना जा सकता है। अतः हमें अपनी चेतना को "श्री रामचन्द्र जी की चेतना' के जैसा बनाने का प्रयत्न करना है। यदि पानी की एक बूँद समुद्र में मिलना चाहती है तो उसे वर्षा की बूँद बनना होगा। पानी की बूँद को तपना होगा; वाष्पीकृत हो कर सूक्ष्म और हल्का होकर ऊपर जाना होगा जिससे पुनः शीतल हो कर , शान्त हो कर, वर्षा की बूँद बन सके। और समुद्र में गिर कर समुद्र में समा सके। विलीन हो सके (मर्जेन्स) । ऐसे विलय के लिए हर व्यक्ति प्रयास करता है। परन्तु जो सही पध्दिति अपनाता है, उसका प्रयत्न सफल होता है। इसके लिए हमें सहज–मार्ग(पी. ए.

एम.) की वैज्ञानिक पध्दिति से साधना करनी होगी। अपने जीवन में प्रातः ध्यान, संध्या की स्वच्छता, सार्वभौमिक प्रार्थना, सतत स्मरण और 'मास्टर' द्वारा दिये गये दस उसूलों (१० कमान्डमैन्टस) का व्यावहारिक–पालन करके, परमात्मा की राह के सच्चे– जिज्ञासु, सच्चे–भक्त, और सच्चे प्रेमी बनना है। तात्पर्य यह है कि साधना के मार्ग पर चलते हुए केन्द्रीय–मण्डल (सैन्टरल रीजन) तक पहुँचना है, परमसत्ता (अल्टिमेट) के समीपतम् पहुँचना है– इससे आगे परमसत्ता (अल्टिमेट) की इच्छा पर निर्भर है।

परन्तु हम अपने व्यवहार(conduct) से अपने ईश्वर के प्रतिनिधि बन कर, उसके विश्व–प्रेम और विश्व–शांति के उद्देश्य को पूरा करने का अथक–प्रयत्न करते रहें। हमारा यह प्रयास, पतन होने से मानवता की रक्षा करेगा और हमारे 'मास्टर' पूज्य बाबूजी के मिशन को, मनुष्य मात्र के हृदय तक पहुँचायेगा। 'मास्टर' के कार्य में भागीदारी से बड़ी प्रसन्नता

हमारे जीवन में हो ही नहीं सकती, ईश्वर सभी बहन और भईयों को इसके लिए आशीर्वाद दें!